# ECONOMICS

Prof - N. Ram
Assistant Professor
R.B.G.R College
Maharajganj (Siwan)

TDC Part I Economics (Hons)
Paper II Indian Economy
TOPIC - Is INDIA over Populated
क्या भारत में जनाधिक्य है ?

Ques क्या भारत में जनाधिक्य है ? अपने उत्तर के कारण सहित व्याख्या कीजिए ?

Ans→ क्या भारत में जनाधिक्य है इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले हमें जनाधिक्य (over population) का अर्थ समझ लेना अति आवश्यक है। जनसंख्या का सम्बन्ध (optimum population) से है। आदर्श जनसंख्या वह है जिससे किसी देश के प्राकृतिक साधनों का समुचित एवं पूर्ण उपयोग हो सके तथा प्रति व्यक्ति आय का स्तर अधिकतम हो। यदि किसी देश की जनसंख्या आदर्श जनसंख्या से अधिक हो तो उसे जनाधिक्य की स्थिति कहते हैं। ऐसी स्थिति में देश के प्राकृतिक साधनों पर श्रमिकों की अनावश्यक भीड़ हो जाती है। इसके फलस्वरूप उत्पादन में कमी होने लगती है तथा प्रति व्यक्ति आय (Per capita income) भी घटने लगती है।

भारत में जनाधिक्य है या नहीं, यह सर्वदा एक विवाद का विषय रहा है। इस सम्बन्ध में दो परस्पर विरोधी तर्क दिये जाते हैं:—

(1) भारत में जनाधिक्य के विरोध में तर्क तथा
(2) भारत में जनाधिक्य के पक्ष में तर्क

अब हम इसका अलग अलग विस्तार पूर्ण अध्ययन करेंगे

## भारत में जनाधिक्य के विरोध में तर्क

सर्वप्रथम कुछ लोग ऐसे है जो यह कहते हैं कि भारत में जनाधिक्य की स्थिति नहीं है और वे जनाधिक्य के विरोध में तर्क देते है 1931 की जनगणना के आयुक्त डॉ० हटन, प्रो० पी० जे० टामस तथा कर्वे का विचार है कि भारत में जनाधिक्य नहीं है। इस मत के समर्थकों का कहना है कि भारत में जनाधिक्य नहीं है बल्कि हमारे पास जो साधन है उसका समुचित विकास और उपयोग नहीं होने के कारण देश में गरीबी है। उनका विचार है कि बढ़ती हुई आबादी देश कल्याण के लिए बाधक नहीं वरन सहायक है। आचार्य बिनोबा भावे ने भी कहा है कि आदमी जन्म लेने के साथ ही दो हाथ और दो पैर लेकर आता है

जबकि उसके पास मुँह एक ही है। यदि उसे उचित साधन मिले तो वह अपना ही भरण पोषण नहीं कर सकता वरन दुसरों को खिलाने के योग्य बन सकता है। इसलिए भारत की गरीबी को मिटाने के लिए जनसंख्या पर नियंत्रण न कर देश के विशाल प्राकृतिक साधनों का समुचित उपयोग करना चाहिए। इस विचार के समर्थकों ने भारत मे जनाधिक्य के विरोध में निम्नलिखित तर्क दिये है :-

(1) प्रति व्यक्ति आय में उत्तरोत्तर वृद्धि (Gradual Rise in Per Capita income) :- भारत में जनाधिक्य के विरोध में तर्क देते हुए कहा जाता है कि यहाँ प्रति व्यक्ति आय में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। यदि जनाधिक्य होता तो ऐसा कभी नही होता। उदाहरण के लिए 1868 मे दादाभाई नौरोजी के अनुसार भारत में प्रति व्यक्ति आय 20 रुपये थी, लार्ड कर्जन के अनुसार 1900 ई० में 33 रुपये फिण्डले शिराज के अनुसार 1911 मे 49 रुपये तथा डा० राव के अनुसार 1931-32 तथा 1942-43 में क्रमशः 65 रुपये तथा 114 रुपये हो गयी। स्वतंत्रता प्राप्ति तथा उसके बाद भी प्रति व्यक्ति आय बराबर बढ़ती रही। उदाहरण स्वरूप भारत की प्रति व्यक्ति आय 1947-48 में 172 रुपये थी जो बढ़कर 1950-51 में 246 रुपये 1960-61 में 306 रुपये, 1970-71 में 633 रुपये, 1980-81 में 1630 रुपये तथा 1995-96 में 10160 रुपये तथा 2009-10 में 46,492 रुपये हो गयी। इस प्रकार प्रति व्यक्ति आय में उत्तरोत्तर वृद्धि इस बात का सूचक है कि भारत में जनाधिक्य की स्थिति नही है।

लेकिन वास्तव में देखा जाय तो मुद्रा स्फीति के कारण केवल प्रति व्यक्ति मौद्रिक आय मे वृद्धि हुई है, प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में इन वर्षो में कोई विशेष परिवर्तन नही हुआ है अतः उपरोक्त तर्क के आधार पर हम यह नही कह सकते है कि भारत में जनाधिक्य की स्थिति नही है।

(2) जनसंख्या का अपेक्षाकृत कम घनत्व (comparatively Less Density of Population) :- ऐसा कहा जाता है कि भारत मे अन्य देशों की तुलना में जनसंख्या का घनत्व कम है। उदाहरण के लिए, नीदरलैण्ड, जापान, पश्चिमी जर्मनी, इंगलैण्ड आदि देशों की तुलना में भारत में जनसंख्या घनत्व कम है। अतः यहाँ जनाधिक्य की स्थिति नही है।

लेकिन ध्यान देने की बात है कि उपरोक्त सभी देश औद्योगिक देश है जिनमें प्रति वर्गमील प्रायः अधिक व्यक्तियों का जीवन निर्वाह हो सकता है। उसकी तुलना भारत जैसे कृषिप्रधान देश से नही की जानी चाहिए। एक कृषि प्रधान देश मे प्रायः प्रति वर्गमील कम जनसंख्या का निर्वाह हो सकता है। अतः हम यह नही कह सकते है कि पश्चिम के औद्योगिक देश की तुलना में भारत में जनसंख्या का घनत्व कम है, अतः यहाँ जनाधिक्य की स्थिति नही है।

(3) श्रम का अभाव (Lack of labour force) :- यह भी कहा जाता है कि भारत में श्रम की कमी है जिससे यह कहना गलत है कि भारत में

जनाधिक्य है। लेकिन यह भी तर्क गलत है। भारत में वास्तव में श्रम की कमी नहीं वरन् यहाँ तो श्रम की अधिकता है। श्रम की कमी के कारण जनसंख्या में कमी नहीं अपितु औद्योगिक, शिक्षा एवं प्रशिक्षण का अभाव है।

इस प्रकार भारत में जनाधिक्य के विरोध में उपर्युक्त तर्क दिए जाते हैं। लेकिन वास्तव में इन तर्कों में सत्यता नहीं है।

## भारत में जनाधिक्य के पक्ष में तर्क
## Arguments in favour of over-population in India

दूसरी ओर डा० राधाकमल मुखर्जी, प्रो० ज्ञानचन्द आदि विद्वानों का मत है कि भारत में जनाधिक्य की स्थिति है। इस मत के समर्थकों का कहना है कि भारत में माल्थस (Malthus) के जनसंख्या सिद्धान्त में बतलाये गये जनाधिक्य में सभी लक्षण मौजूद हैं जैसे- जनसंख्या की वृद्धि एवं खाद्यान्न की पूर्ति में असंतुलन के अनेक लक्षण मौजूद हैं। इसलिए भारत में जनाधिक्य के पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिये जाते हैं।

(1) जनसंख्या की वृद्धि एवं खाद्यान्न की पूर्ति में असंतुलन :— भारत एक कृषि प्रधान देश है लेकिन फिर भी देशवासियों के भरण पोषण के लिए यहाँ पर्याप्त मात्रा में अन्न प्राप्त नहीं होता है। इससे देश में बराबर खाद्यान्न का संकट बना रहता है और इसे दूर करने के लिए प्रति वर्ष अरबों रुपये का खाद्यान्न विदेशों से आयात करना पड़ता है। यह ठीक है कि देश में विगत कुछ वर्षों में खाद्यान्न के उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है। लेकिन जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होने के कारण प्रति व्यक्ति खाद्यान्न की उपलब्धि प्रायः स्थिर रही है। उदाहरण के लिए 1951 ई० में प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न की उपलब्धि 304·8 ग्राम थी जो 1961 में बढ़कर 468·7 ग्राम तथा 1991 में 510 ग्राम हो गयी लेकिन 1992 में यह घटकर 469 ग्राम तथा 2009 में करीब 444 ग्राम हो गयी। इस प्रकार इन वर्षों में प्रति व्यक्ति खाद्यान्न की उपलब्धि में प्रायः कमी ही हुई। यह वास्तव में तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या का सूचक है। यदि जनसंख्या तेजी से नहीं बढ़ती तो खाद्यान्न में कुल उत्पादन में वृद्धि होने के साथ साथ प्रति व्यक्ति खाद्यान्न की उपलब्धि में भी वृद्धि होती। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इससे स्पष्ट है कि भारत में जनाधिक्य की स्थिति विद्यमान है।

(2) कृषि पर जनसंख्या की अत्यधिक निर्भरता :— भारत में कुल जनसंख्या के करीब 70 प्रतिशत लोग कृषि पर आश्रित हैं। इस प्रकार कृषि पर जनसंख्या का बोझ बढ़ गया है और उत्पादन में जितनी वृद्धि होनी चाहिए थी उतनी नहीं होती। वास्तव में कृषि के क्षेत्र में आवश्यकता से अधिक लोग लगे हुए हैं अथवा दूसरे शब्दों में कहा जाए कि कृषि में छिपी हुई बेरोजगारी (Disguised unemployment) विद्यमान है। ऐसा अनुमान लगाया गया है कि भारत में कृषि में लगे हुए लोगों में से करीब

करीब 1/1 प्रतिशत व्यक्तियों को हटा दिया जाए तो भी कृषि उत्पादन में कोई कमी नहीं होगी। पुनः जनसंख्या में वृद्धि होने के साथ साथ प्रति व्यक्ति कृषि योग्य में कमी हो रही है। उदाहरण के लिए 1931 ई० में प्रति व्यक्ति उपलब्ध कृषि योग्य भूमि 0.88 एकड़ थी जो जो 1951 ई० में घटकर 0.72 एकड़ तथा पुनः 1969-70 ई० में घटकर 0.26 एकड़ हो गयी। इन तथ्यों से यह साफ जाहिर होता है कि भारत में जनाधिक्य की स्थिति है।

(3) अपर्याप्त औद्योगिक विकास (Inadequate Industrial development) :- भारत में उद्योगों का विकास भी पर्याप्त नहीं है जो जनाधिक्य की स्थिति को प्रकट करता है। हम जानते हैं कि औद्योगिक विकास पूंजी निर्माण पर तथा पूंजी निर्माण बचत (saving) पर निर्भर करता है। लेकिन भारत में जो कुछ भी उत्पादन होता है उसका अधिकांश भाग बढ़ती हुई जनसंख्या उपभोग कर जाती है जिससे बचत बहुत कम होती है और उद्योगों का विकास नहीं हो पाता। इसमें बढ़ती हुई जनसंख्या को उद्योगों में पर्याप्त रोजगार भी नहीं मिलता। यह भारत में जनाधिक्य का सूचक है।

(4) प्रतिबंधक निरोधों की कमी (Lack of Prentive checks) :- भारत में प्रतिबंधक निरोधों को कम अपनाया जाना भी जनाधिक्य का सूचक है। प्रतिबन्धक निरोधों में देर से शादी करना, ब्रह्मचर्य पालन, अविवाहित जीवन व्यतीत करना, आत्मसंयत तथा संतति निरोध के कृत्रिम साधनों का प्रयोग करना आदि आते हैं। लेकिन भारत में गरीबी, रूढ़िवादिता, अशिक्षा आदि के कारण इन प्रतिबन्धक निरोधों की कमी है जिससे जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई है और जनाधिक्य की स्थिति उत्पन्न हो गई है।

(5) प्राकृतिक प्रकोपों का प्रभाव (Effects of Natural calamities) :- माल्थस ने बतलाया था कि यदि प्रतिबन्धक निरोधों को नहीं अपनाया गया तो प्राकृतिक निरोध (Positive checks) बढ़ी हुई जनसंख्या को कम करने के लिए सजग हो जाते हैं तथा ये जनाधिक्य के सूचक है। भारत में प्रति वर्ष अकाल, भूखमरी, बाढ़, सूखा, महामारी आदि का प्रकोप किसी ना किसी भाग में रहता ही है जिसमें हजारों व्यक्तियों की मृत्यु होती है। ये प्राकृतिक प्रकोप भारत में जनाधिक्य के सूचक हैं।

(6) बढ़ी हुई बेकारी (Increasing unemployment) :- भारत में लगातार बढ़ती हुई बेकारी भी जनाधिक्य का सबसे बड़ा प्रमाण है। भारत में 1955-56 ई० में करीब 53 लाख व्यक्ति बेरोजगार थे जिनकी संख्या बढ़कर 2006-07 में करीब 367 लाख हो गयी। यहाँ स्मरणीय है कि पंचवर्षीय योजनाओं में रोजगार के अवसरों में लगातार वृद्धि

होने के बावजूद देश में बेकारी बढ़ रही है जो जनाधिक्य का सूचक है।

(7) प्रति व्यक्ति आय में धीमी गति से वृद्धि :- भारत में पंचवर्षीय योजनाओं के फलस्वरूप राष्ट्रीय आय में जिस गति से वृद्धि हुई है उस गति से प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि नहीं हुई है जो देश में जनाधिक्य का सूचक है। उदाहरण के लिए 1950-51 ई० में प्रचलित मूल्यों पर राष्ट्रीय आय 8.812 करोड़ रुपये हो गयी तथा प्रति व्यक्ति आय 246 रुपये थी जो 2009-10 में बढ़कर क्रमशः 54,39557 करोड़ रुपये से 46,492 करोड़ रुपये हो गयी। इस प्रकार जबकि इस अवधि में राष्ट्रीय आय में 617 गुनी वृद्धि हुई, प्रति व्यक्ति आय में केवल 188 गुणी वृद्धि हुई। यदि देश में जनसंख्या तेजी से नहीं बढ़ती तो राष्ट्रीय आय में वृद्धि के अनुरूप ही करीब करीब प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती। इस प्रकार प्रति व्यक्ति आय में धीमी गति से वृद्धि देश में जनाधिक्य का परिचायक है।

(8) निम्न जीवन स्तर :- भारत में देशवासियों का निम्न जीवन स्तर भी देश में जनाधिक्य का बहुत बड़ा प्रमाण है। यहाँ लोगों की प्रति व्यक्ति आय अन्य देशों की तुलना में काफी कम है जिससे उनके रहन सहन का स्तर भी निम्न कोटि का है। उदाहरण के लिए 2008 में संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रति व्यक्ति औसत राष्ट्रीय आय 47,930 डालर, ग्रेट ब्रिटेन में 46.040 डालर तथा जापान में 38,130 डालर थी जबकि भारत में यह केवल 1040 डालर थी। इस प्रकार प्रति व्यक्ति कम राष्ट्रीय आय तथा लोगों का निम्न जीवन स्तर भारत में जनाधिक्य का परिचायक है।

निष्कर्ष :- हम भारत में जनाधिक्य के पक्ष एवं विपक्ष में दिये गये तर्कों को देख चुके है। स्पष्ट है कि जनाधिक्य के विरोध में दिये जानेवाले तर्कों में सत्यता नहीं है। अतः यह कहना गलत होगा कि भारत में जनाधिक्य की स्थिति नहीं है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत में निश्चय ही जनाधिक्य की स्थिति विद्यमान है। आज देश की जो स्थिति है तथा जिस हद तक हमें अपने साधनों का विकास कर चुके है, उस हालत में जनाधिक्य की समस्या वर्तमान है। वास्तव में जनाधिक्य आदर्श जनसंख्या तथा अल्प जनसंख्या की धारणाएँ स्थिर नहीं वरन ~~अधिक~~ गतिशील है। स्थान समय आदि में परिवर्तन के साथ इन धारणाओं में भी परिवर्तन हो सकता है

The End

N. Ram
24|4|20